बुद्ध काल या मौर्यपूर्व काल का इतिहास

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

बुद्ध काल या पूर्व मौर्य काल या 600-321 BC का काल खंड सामाजिक, राजनतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण काल था. इसमें परिवर्तन के साथ-साथ निरन्तरता के तत्व भी विद्यमान थे| इसमें एक ओर जहाँ कुछ क्षेत्र में व्यापक तौर पर क्रांतिक परिवर्तन हुए वहीं कुछ तत्व अपने पुराने रूप में बने रहें| इस काल में कुछ ऐसी भी घटनाएं हुई जिसने अन्य घटनाओं पर प्रत्यक्ष एवं निर्णायक प्रभाव डाला| हम इस लेख में इस काल के इतिहास की प्रमुख चीजों को बता रहे है|

बुद्ध काल या मौर्यपूर्व काल के जानकारी के स्त्रोत

पूर्व मौर्य काल के बारे में जानकारी साहित्यिक एवं पुरातात्विक दोनों स्त्रोतों से प्राप्त होती है|

बुद्ध काल या मौर्यपूर्व काल के जानकारी के साहित्यिक स्त्रोत

ब्राह्मण साहित्य, बौद्ध साहित्य तथा जैन साहित्य जैसे साहित्यक स्त्रोतों से इस काल के बारे में जानकारी मिलती है.

ब्राह्मण साहित्य: इसके तहत वेदांग या सूत्र साहित्य आते है. यह पुस्तकें संस्कृत में लिखी है. इनकी संख्या 6 है जो निम्न है.

- **शिक्षा** – स्वर ज्ञान को समझने के लिए
- **छंद** – छंद ज्ञान को समझने के लिए
- **निरुवत** – शब्दों की व्युत्पत्ति को जानने के लिए (यास्क का निरुक्त इसी काल की रचना है जो भारत की प्रथम भाषाई रचना है.
- **व्याकरण** – व्याकरण को समझने के लिए (व्याकरण की रचना अष्टाध्यायी इसी समय पाणिनि द्वारा लिखी गई.)
- **ज्योतिष** – ज्योतिष ज्ञान को समझने के लिए
- **कल्पसूत्र** – कर्मकांडो का संकलन – इसे आगे चार और भागों में बांटा गया.
- **श्रोत सूत्र** – कर्मकांडो का संकलन
- **धर्म सूत्र** – हिन्दू विधियों का संकलन. इसमें सामाजिक राजनितिक, धार्मिक नीतियों का संकलन है.
- **गृह सूत्र** – गृहस्थो के लिए निर्देश
- **शुल्व सूत्र** – यह गणित की पुस्तक है. भारतीय ज्यामिति का विकास इसी से माना जाता है. (बौधायन इसी काल के ज्यमितिकार थे)

- **बौद्ध साहित्य**: इसके तहत त्रिपिटक आता है जो पालिभाषा में लिखा गया है. त्रिपिटक निम्नलिखित है.

- **विनयपिटक** – यह बौद्धों के नियमों की पुस्तक है.
- **सूत्र पिटक** – यह बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन है.
- **अभिधम्म पिटक** – यह बौद्ध दर्शन से संबंधित है.
- **जैन साहित्य**: इसके तहत आगम साहित्य एवं सूत्र साहित्य आता है। यह प्राकृत भाषा में लिखी गयी है।